रूठा स्पिंकी

विलियम स्टिग, हिंदी : पूर्वा याज्ञिक

स्पिंकी का भयानक परिवार!
वे उसे प्यार नहीं करते, वे उसे समझते नहीं, उनमें से कोई कुछ भी क्यों न कहे या करे वे स्पिंकी को इस राह से डिगा नहीं सकते. न उसकी माँ की पुच्चियाँ और उसके हाथ के बने स्वादिष्ट केक, न पिता के समझदारी से भरे भाषण, न भाई, बहन, दादा-नानी, और दोस्तों से मुलाकात. "समूची दुनिया उसके खिलाफ थी, वह भी दुनिया के खिलाफ था, और इसमें सभी जीवित चीज़ें शामिल थीं – सिवा जानवरों के." ऐसे में स्पिंकी भला क्या कर सकता है, सिवा बुरी तरह रूठ कर "कपड़ों की गठरी" की तरह झूले पर जा पड़ने के? और उसका स्नेही, धैर्यवान परिवार उसे मनाने के लिए भला क्या कर सकता है?

विलियम स्टिग हमेशा की तरह अपनी हाज़िर-जवाबी और ऊर्जा के साथ इस समस्या को संबोधित करते हैं. रूठा स्पिंकी में किस्सागोई खिलंदड़ी है और उनके अदभुत चित्र उसी टक्कर के हैं.

रूठा स्पिंकी

विलियम स्टिग, हिंदी : पूर्वा याज्ञिक

स्पिंकी घर से धड़धड़ाते हुए बाहर निकला और घास पर जा लेटा. वह इतना परेशान था कि उसे वे फूल नज़र तक न आए जिन्हें वह घूर रहा था. उसका बेवकूफ परिवार! कायदे से उन्हें उसे प्यार करना चाहिए, पर प्यार के नाम पर ठेंगा! प्यार तो उसकी माँ भी नहीं करती.

कुछ समय बाद उसकी बहन विलामिना बाहर आई और बोली, “माफ़ी चाहती हूँ कि मैंने तुम्हें स्टिंकी स्पिंकी कहा.” स्पिंकी ने कोई जवाब नहीं दिया.

“स्पिंकालिंक,” वह बोली, “माफ़ कर दो ना!” स्पिंकी ने तब भी कोई जवाब नहीं दिया, सो वह वापस अन्दर चली गई.

“अब मांग रही है माफ़ी,” वह बड़बड़ाया.

कुछ देर बाद स्पिंकी का भाई, हिच, आया और उसने स्पिंकी को अपनी उंगली से छुआ. स्पिंकी ने उसे झटक दिया. “तुम बिल्कुल सही कह रहे थे,” हिच ने कहा. “मैंने ढूंढ कर देखा. फ़िलेडैल्फ़िया ही बेल्जियम की राजधानी है.”

स्पिंकी ने पीठ मोड़ ली. उसके भाई की लिजलिजी आवाज़ उससे झेली नहीं जा रही थी.

“स्पिंकी, खाने का वक़्त हो गया है,” हिच ने कहा. “माँ चाहती हैं कि तुम अन्दर आ जाओ.”

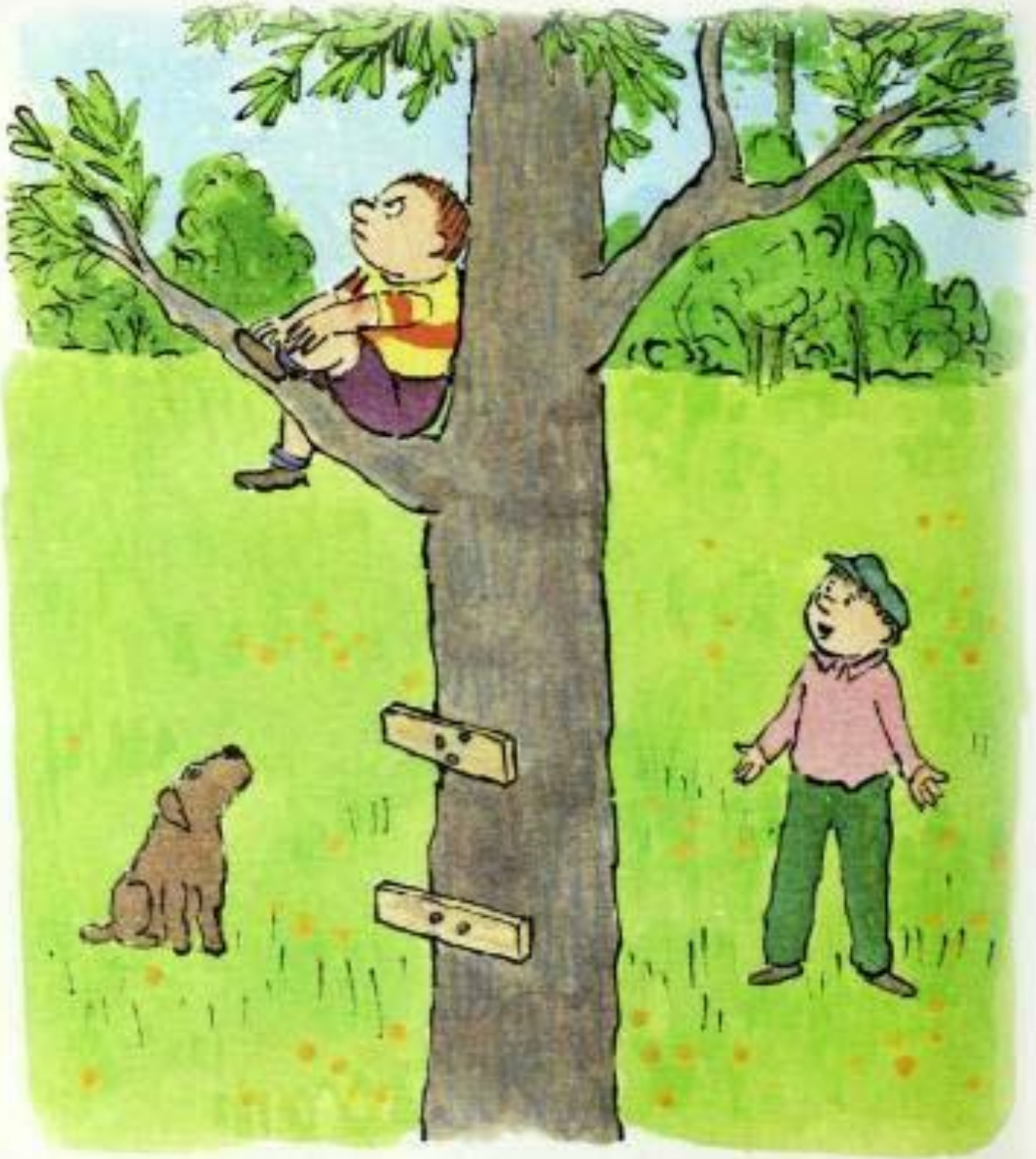

जवाब देने के बदले, स्पिंकी बड़े पेड़ पर जा चढ़ा.

उसके माँ-पिता खिड़की से देख रहे थे. “बेचारा बच्चा, उसे जल्दी ही बुरा लग जाता है,” उसकी माँ ने कहा. “मैं जाकर उससे बात करती हूँ, हैरी.”

“बिलकुल नहीं रूबी,” उसके पिता ने कहा. “उसके उबाल को कम होने दो. यों रूठ कर मुंह फुलाने का कोई कारण नहीं है उसके पास.”

जब अँधेरा होने लगा तब स्पिंकी की माँ बाहर आईं, उन्होंने उसे बारबार चूमा, और कहा कि वे उसे पूरे दिल से प्यार करती हैं, जब वह पैदा हुआ था उसी पल से. और उससे पहले से भी.

तब उन्होंने उसे कम्बल से ढंका और फिर से चूमा – यह कोई नकली चुम्मा नहीं था. पर स्पिंकी पत्थर-सा पड़ा रहा. इतनी देर से आने वाले चुम्मों में उसकी कोई रुची नहीं थी.

अगली सुबह, जब स्पिंकी के पिता काम पर निकले, स्पिंकी कहीं नज़र नहीं आया.

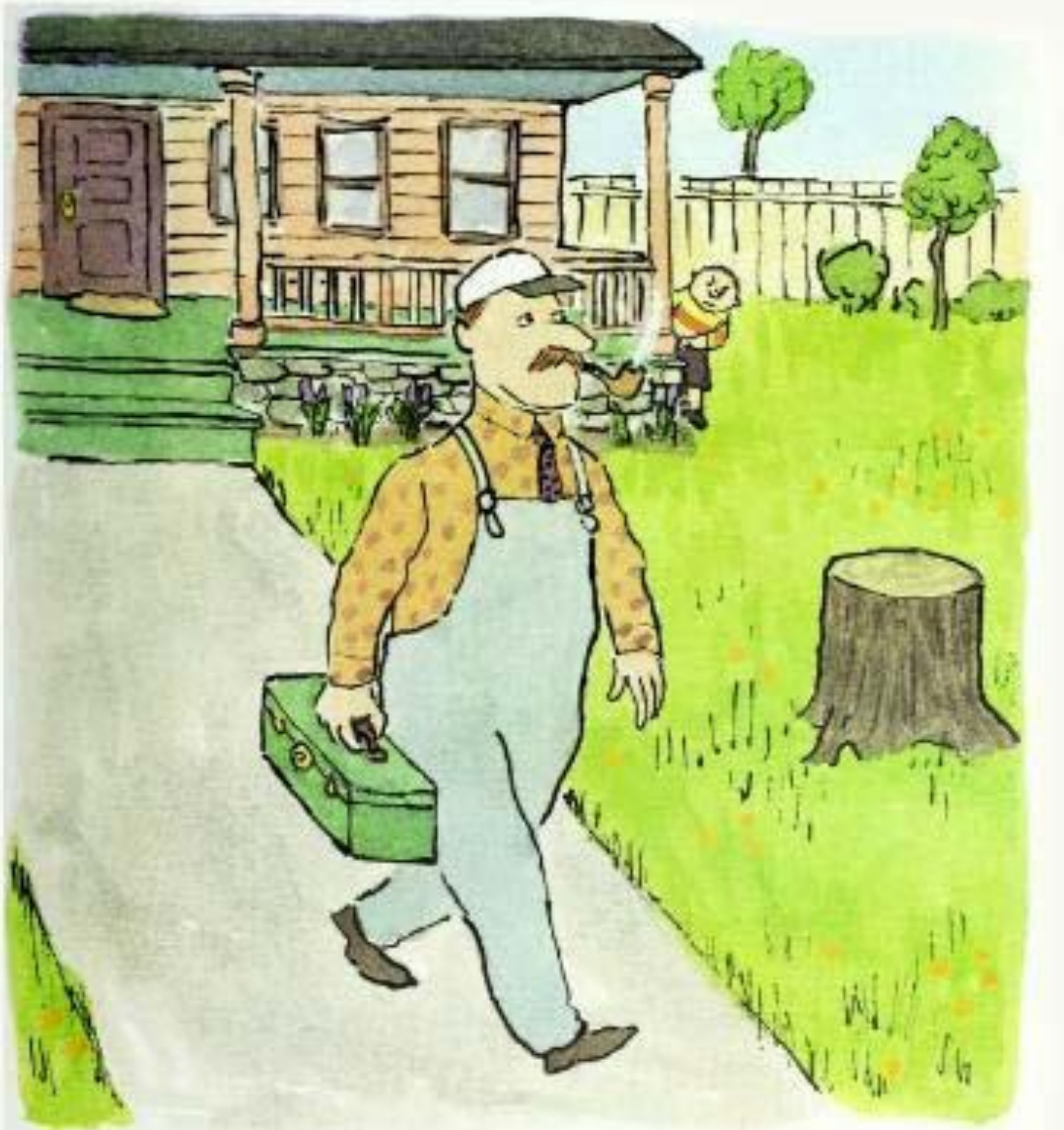

दो ही पल बाद वह घर के पिछवाड़े किरासन के खाली कनस्तर को लतिया रहा था. “कैसा बाप है!” वह फुफकारते हुए बोला.

दोपहर को उसकी माँ एक थाली परोसकर लाई. स्पिंकी ने उसकी ओर नज़र तक नहीं उठाई. “अब ये अचानक अच्छा सुलूक कर रहे हैं!” उसने सोचा.

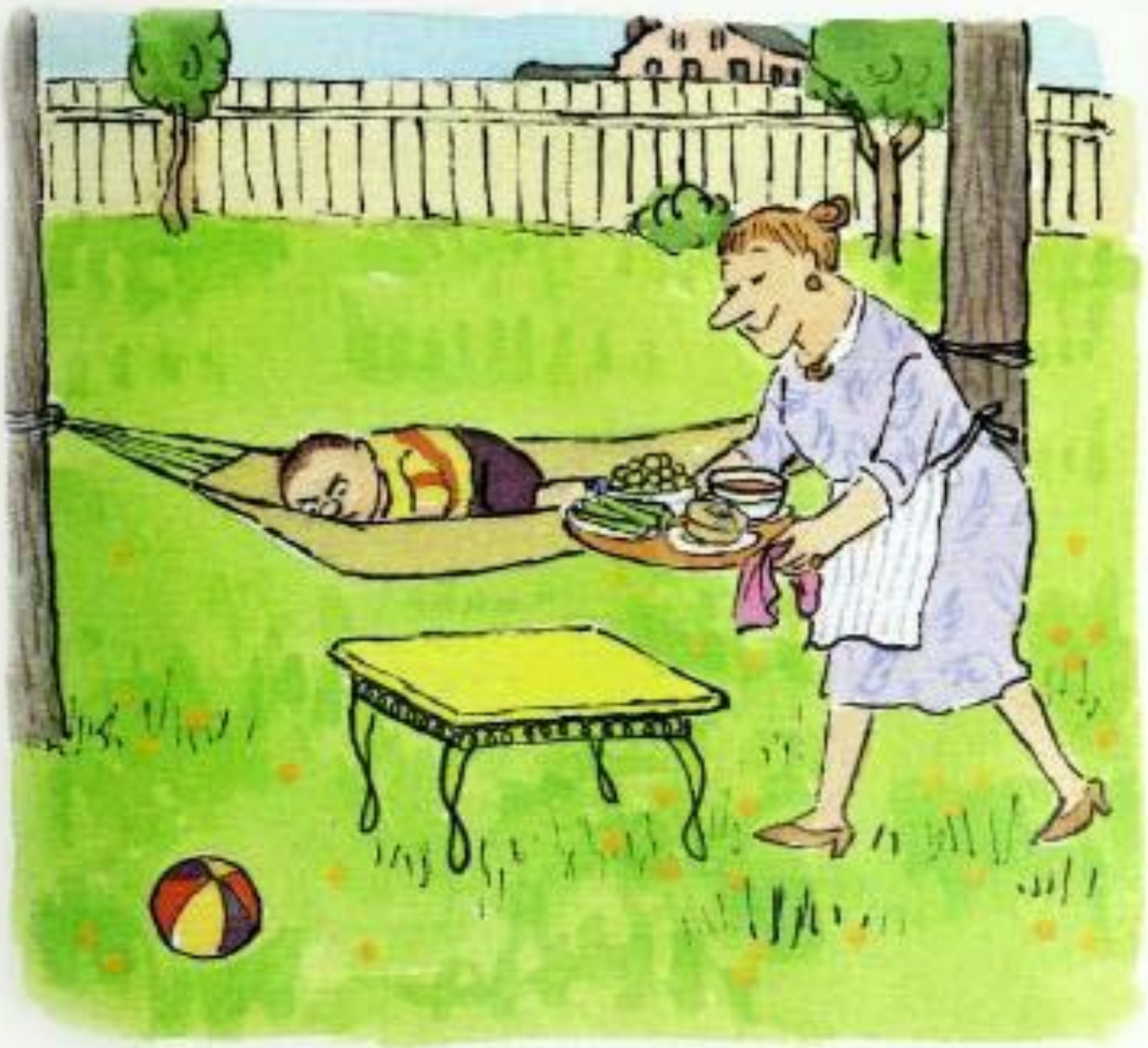

जब माँ वापस लौटी, उसने पाया कि टमाटर का सूप और ऐस्पैरागस जस-से-तस धरे हुए हैं, पर केक और अंगूर गायब हैं.

हिच और विलामिना को स्पिंकी, अलग-अलग जगहों पर नज़र आता रहा.

वे उससे कुछ बुलवाने की कोशिश करते, या उसे देख कर गुज़र जाते.

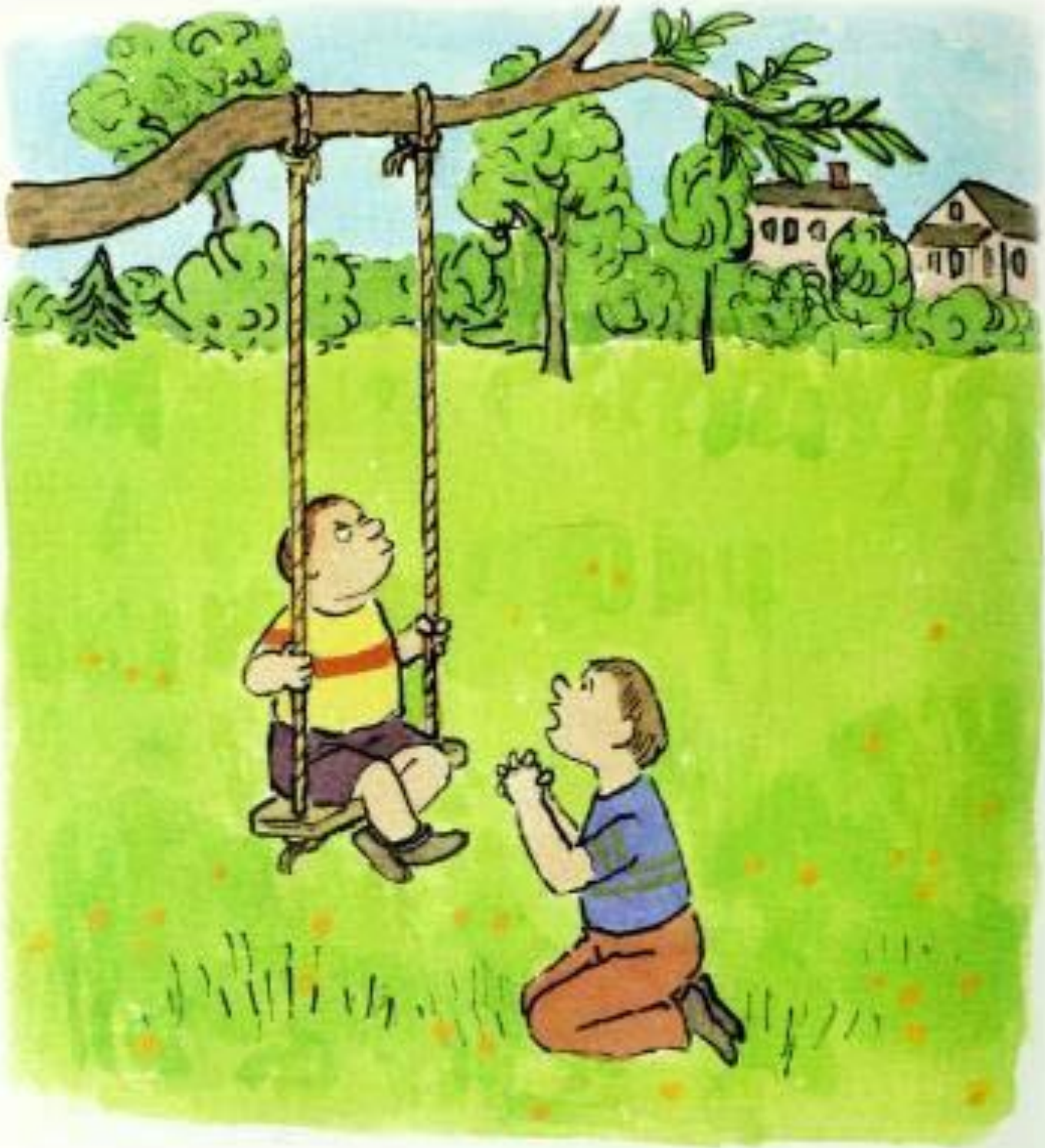

हिच एक बार अपने बदसूरत घुटनों पर झुका और ऐसा कुछ भी करने के लिए माफ़ी मांगी जो स्पिंकी को नागवारा लगी हो. पर इससे हिच के लिए स्पिंकी की खीज और बढ़ गई.

स्पिंकी की माँ उसके पास बैठीं और उसका हाथ थामा, पर उसने अपना हाथ नूडल की तरह ढीला छोड़ दिया.

विलामिना ने बाग से डेज़ी के कुछ फूल चुने और उन्हें स्पिंकी के हैमक झूले पर अटका दिया. स्पिंकी ने उन्हें निकाल फेंका.

तकरीबन चार बजे, सर्कस का एक जलूस निकला.
“देखो स्पिंकी,” माँ ने कहा. “मसखरे हाथी!” पर स्पिंकी ने उनकी ओर पलट कर झाँका तक नहीं.

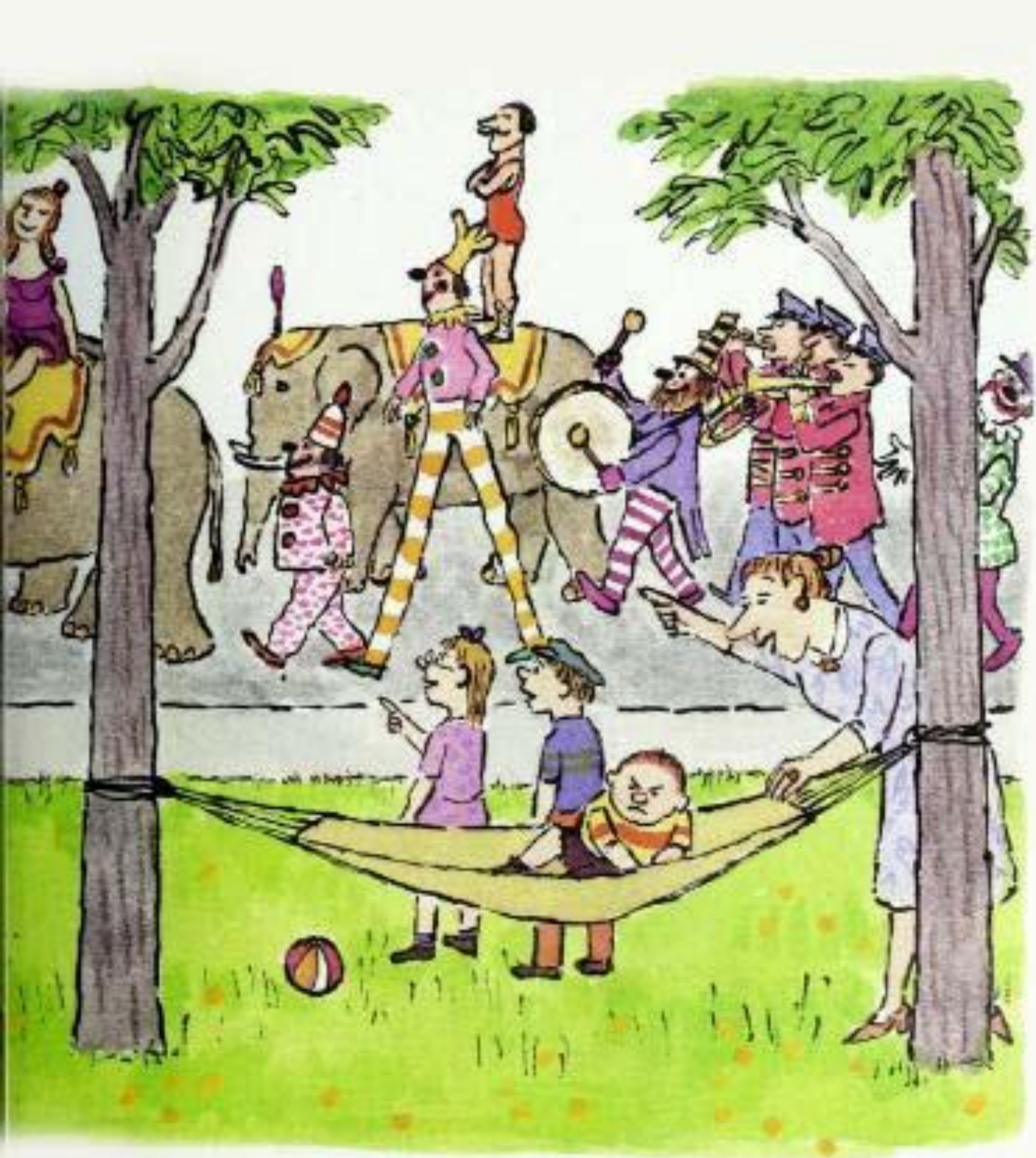

कैसा परिवार है भला! पहले उसकी ज़िन्दगी बरबाद कर दी, और अब उम्मीद यह कि वह जलूस का मज़ा ले!

स्पिंकी के सबसे अच्छे दोस्त, स्मज और इग्गी, उससे मिलने आए. स्मज, हैमक झूले पर चढ़ा और उसके कानों में ऊटपटांग बकने लगा. स्पिंकी ने उसे लतिया कर बाहर किया.

स्मज और इग्गी ने उसे झुलाने की कोशिश की. स्पिंकी को अमूमन इसमें मज़ा आता था, पर इस वक़्त नहीं. उसने खुद को हैमक में लपेटा और ओंझल हो गया, सो उसके दोस्त चले गए.

उस शाम स्पिंकी के पिता ने उसे एक लम्बा भाषण दिया. उन्होंने कहा कि हालांकि एक नन्हे बच्चे की तरह रूठ कर मुंह सुजाकर स्पिंकी गलती कर रहा है, इसके बावजूद सब उससे प्यार करते हैं. उसे एहसास हो या न हो, दरअसल वह तीनों बच्चों में सबसे चहेता है.

इस बकवास को सुनने से बचने के लिए स्पिंकी को अपने कान ढकने पड़े. कोई समझ ही नहीं पा रहा था कि वह भी एक इंसान है जिसके अपने ख्याल और भावनाएं हैं, जिनकी वे कद्र नहीं करते. दुनिया उसके खिलाफ है, सो वह भी दुनिया के खिलाफ है, इसमें सभी जीवित लोग शामिल थे – सिवा जानवरों के.

स्पिंकी का परिवार फ़िक्रमंद था. उसे इस कदर दुखी देखना उन्हें बुरा लग रहा था. उस रात उन्होंने आपस में मशविरा किया, और स्पिंकी के पिता ने कुछ फोन किए.

अगले दिन छुट्टी थी. सूरज दमक रहा था, चिड़ियाँ ख़ुशी से चहक रही थीं. पर स्पिंकी को इस सबसे कोई मतलब नहीं था. पर अपने हैमक झूले पर कपड़ों की गठरी-सा पड़ा रहा.

उसकी पसंदीदा दादी अचानक उसकी मनपसंद मीठी गोलियों के साथ आ पहुंची. उन्होंने उसे प्यार से गले लगाया, पर स्पिंकी उनकी बाँहों में बेजान पड़ा रहा.

आखिर वे भी तो मनुष्य जाति की थीं, जिससे उसका कोई सरोकार न था.

ठीक उसी वक़्त एक मसखरा ठुमकते हुए उसकी ओर बढ़ आया, वह एक तख्ती थामे था जिस पर लिखा था: “हम तुम्हें प्यार करते हैं स्पिंकी”. मसखरे ने उसे आँख मारी और स्पिंकी की जेब से एक तिहरा आइसक्रीम कोन (पिस्ता, केला, और चॉकलेट चिप्स) निकाल कर पेश किया.

स्पिंकी को बरबस हंसी आई. पर तब उसने अपने पिता को मुस्कुराते देख लिया – उसे पूरी बात समझ आ गई. मसखरे को उसे खुश करने के लिए बुलाया गया था. इससे बात नहीं बनने वाली.

पूरे दिन सबने उससे प्यार जताने और उसका ख्याल रखने की भरसक कोशिश की. जब बारिश होने लगी तो माँ ने उसे तारपोलिन से ढका और पिता ने उसके पास बड़ी-सी छतरी तान दी.

हिच और विलामिना ने उसे केक और सैंडविच परोसे.
पर स्पिंकी माना ही नहीं, हालांकि वह गुस्सा थूक देने पर सोचने लगा था.

हो सकता है कि इन लोगों को तमीज से सुलूक करना ही नहीं आता हो, पर कम-से-कम कोशिश तो वे कर ही रहे थे. वे बेहतर सुलूक नहीं कर सकते इसमें उनकी क्या गलती थी? स्पिंकी अब नाराज़ नहीं था, पर उसका गुरूर तो बरकरार था. इतनी तकलीफ झेलने के बाद, वह अचानक रवैया बदल, लाड़ कैसे जताता? यह उसका तरीका नहीं था.

स्पिंकी यह सोचते जागता रहा कि वह किस तरह गुस्सा थूक दे, पर उसकी नाक भी न कटे. उसने तय किया कि वह सबको हैरत में डाल देगा.

भोर होने के पहले वह घर में घुसा और दबे पांव अपनी कारगुजारी में जुट गया.

सुबह पूरा परिवार एक के बाद एक, भारी मन से खाने के कमरे में उतरा. उनके सामने मेज़ पर बेहतरीन भोज सजा हुआ था, और एक मसखरा उन्हें खाने को बुला रहा था.

बेशक उन्हें मालूम था कि वह कौन था. वे इतनी जोर से हँसे कि थमने में उन्हें काफी वक़्त लगा.

इसके बाद स्पिंकी का परिवार उसकी भावनाओं को लेकर सावधान रहने लगा.

अफ़सोस कि वे सावधानी हमेशा-हमेशा नहीं बरत सके.